

ગૈરુલ્લાહ કે તિએ જાનપર ઝબહ કરના

તશરીહ

શૈખ સાલિહ બિન અબ્દુલ અઝીઝ બિન મુહમ્મદ
બિન ઈબ્રાહીમ આલિ શૈખ

લિપિયાંતર :
અશરફઅલી ઉષ્માન ખત્રી

નઝરેખાની :
મૌલાના ઈબ્રાહીમ નૂરી હફીઝુલ્લાહ

गेरुल्लाह के लिये

ज्ञानपर झबह करना

गेरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी) के लिये (ज्ञानपर) झबह करने की शदीद वधद (सप्त बुराई आई) है और वह ये के ये अल्लाह अज़्ज़वजल के साथ शिर्क है. झबह से मुराद भून बहाना है.

झबह में दो चीज़ें अहम होती हैं :

- (१) किसी का नाम लेकर झबह करना.
- (२) किसी का कुर्ब हासिल करने के लिये झबह करना.

पेहली सूरत में असल चीज़ नाम है और दूसरी सूरत में कस्द व धरादह.

दरअसल ज्ञानपर झबह करते वक्त् जिस का नाम लिया जाये उस से धस्तिआनत और मदद मक्षूद होती (धरादह होता) है. मफलन् अगर आप “बिस्मिल्लाह” कहेंगे तो धस का मतलब ये होगा के में अल्लाह के नाम से मदद हासिल करते हूँ और उसे

मुतजर्रिक (बरकतवाला) समझते हूँ अजब करता हूँ।
 रही बात कस्ट व धरादह की तो ये उबूदीयत
 (धबादत) और बंदगी के धर्रहार की अक सूरत है।
 नाम और कस्ट व धरादह के लिहाज (जयाल) से हमारे
 सामने चार सूरतें आती हैं :

(१) अल्लाह का नाम लेकर उसी के तर्कुब
 (नर्रदीकी) के कस्ट से अजब करना। ये सरासर तोहीद
 और धबादत है। धस सूरत में अजब करने के लिअे दो
 शर्तें हैं। पहली तो ये के अल्लाह के तर्कुब के धरादे से
 अजब करे, दूसरी ये के अल्लाह का नाम लेकर अजब
 करे। जैसे कुर्बानी, हदी (हज्ज की कुर्बानी), और
 अकीकह पगैरह। अगर जानबूज कर अल्लाह का नाम
 न लिया तो अजीहा हलाल न होगा। ये दोनों शर्तें
 बैकपस्त तब हैं जब अजब से अल्लाह का तर्कुब
 मक्सूद हो। और अगर अल्लाह के तर्कुब के लिअे नहीं
 बल्के मेहमानों की मेहमान नपाळी के लिअे या अपने
 जाने के लिअे अजब करे तो ये जाधज है, शरअन

(शरीअत में) एस की एजाजत है कयुंके उसने अल्लाह का नाम लेकर ज़बह किया है, गैरुल्लाह का नाम नहीं लिया. ये पछट में दाखिल न होगा न मुमानअत (मनाही) में.

(२) ज़बह तो अल्लाह का नाम लेकर किया जाये लेकीन मइसूद उस से गैरुल्लाह का तर्कुब हो. मखलन् ज़बह के पक्ष ये कहे “बिस्मिल्लाह-में अल्लाह का नाम लेकर ज़बह करता हूं” और एस ज़बह से उसकी नीयत किसी मदकून (दकन शुदह) नबी या किसी बुर्जुग का तर्कुब हो.

जअज़ देहाती (गांव के) या शेहरी लोगों का ये तरीकह है के पह किसी की आमद (आने) पर उसकी तअज़ीम (एजाजत) के लिअे, जेबाएश प जुशनुमाए (सजापट) या जानपरों को ज़बह कर के उसका इस्तिफाल करते हैं. एस ज़बह में अगरयेह अल्लाह का नाम लिया जाता है, लेकीन कयुंके उस से मइसूद गैरुल्लाह को राज़ी करना होता है एस लिअे उलमाने

ઇસ ફિઅલ (કામ) કે હરામ હોને કા ફતવા દિયા હૈ,
 કયુંકે ઇસ મેં ગૈરુલ્લાહ કે લિઅે ખૂન બહાયા જાતા હૈ
 ઇસ લિઅે ઉસે ખાના ભી જાઇઝ નહીં હૈ. જબ ઇસ
 સૂરત મેં કિસી કી તઅઝીમ કે લિઅે ઝબહ કરના ઓર
 ખૂન બહાના જાઇઝ નહીં તો ફિર કિસી ફોત શુદહ
 (નબી યા બુઝુર્ગ) કી તઅઝીમ (યા તકરુબ) કે લિઅે
 ઝબહ કરના ઓર ખૂન બહાના તો ઓર ભી ઝિયાદહ
 નાજાઇઝ ઓર હરામ હુવા કયુંકે ખૂન બહા કર સિફ
 અલ્લાહતાલા હી કી તઅઝીમ કરના જાઇઝ હૈ. જબ
 રગોં મેં ખૂન ઉસીને (અલ્લાહને) જારી કિયા હૈ તો ફિર
 તઅઝીમ વ ઇબાદત કા હક્કદાર ભી વહી હૈ.

(૩) ઝબહ ગૈરુલ્લાહ કા નામ લેકર કિયા જાઅે
 ઓર ઉસ સે મક્સૂદ ભી ગૈરુલ્લાહ કા તકરુબ હી હો.
 મષલન્ “બિસ્મિલ્ મસીહી” કેહ્ કર ઝબહ કરે ઓર
 તકરુબ ભી મસીહ (હઝરત ઇસા અલૈહિસ્સલામ) હી
 કા મક્સૂદ હો. યે બહુત બડા શિર્ક હૈ. શિર્ક
 ફીલ્ઇસ્તિઆનત (મદદ માંગને મેં) ભી ઓર શિર્ક

ईल्फबादत (बंदगी में) भी. इसी तरह शैल बटपी, हजरत हुसैन (रदियल्लाहुअन्हु), सैय्यिदह ज़ैनब (रदियल्लाहुअन्हा) या धन के धलापह वह शप्सीयात जिन से लोग धबादत और पूजावाला मुआमलह रजते हैं उनके नाम लेकर ऋजह करने का भी यही हुक्म है क्योंकि उनके नाम लेकर ऋजह करते पक्ष लोगों की नीयत और धरादह उनका तर्कुरुज होता है. धस लिअे ये दो तरह से शिर्क बन जाता है. अक तो धस्तिआनत और मदद के हुसूल (तलब करने) की पजह से और दूसरा उबूदीयत (धबादत), तअज़ीम और गैरुल्लाह के लिअे जून बहाने की पजह से.

(४) ऋजह गैरुल्लाह का नाम लेकर किया जाने और उस से मद्सूद 'अल्लाह का तर्कुरुज' हो और ये बहुत कलील और नादिर (कम होता) है. और कभी ऐसा भी होता है के ऋजह तो किसी बुरुज के लिअे किया जाता है मगर नीयत ये होती है के उस से अल्लाह का कुर्ब हासिल किया जाने तो ये भी

दरहकीकत शिर्क झील्यस्तिआनत और शिर्क
 झील्यबादत ही में शामिल है. अल्गर्ज़ (मतलब ये के)
 गेरुल्लाह के तर्कुरुब के लिअे झबह करना उब्बूदीयत में
 शिर्क है और गेरुल्लाह का नाम लेकर झबह करना
 इस्तिआनत और मदद के लिअे तलब में शिर्क है.
 इसी लिअे अल्लाह अज़्ज़पजल्ने इरमाया है : “और
 जिन जानवरों (के झबह) पर अल्लाह का नाम न
 लिया जाये, उन में से कुछ न जाओ, और बिलाशुबह
 ये हिस्स (गुनाह) और नाजाइज़ है और बेशक
 शयातीन अपने दोस्तों की तरफ़ धट्का (दील में बात
 डाला) करते हैं ताके पह तुम्हारे साथ झधड़ें और अगर
 तुमने उनकी बात मान ली तो बिलाशुबह तुम भी
 मुश्रिक हो जाओगे.” (सूरह अन्आम आयत : १२१)

अल्लाहतआला का इशार्ह है : “केह दीजिये !
 बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी झिंदगी और मेरी
 मौत अल्लाह रब्बुल् आलमीन के लिअे है. उसका कोह
 शरीक नहीं और मुझे इसी बात का हुक्म दिया गया है

और मैं उसका सबसे पहला इर्माजदार हूँ।”

(सूरह अन्आम आयत : १५२, १५३)

धन आयतों से षाबित हुवा के नमाज़ और कुर्बानी दोनों धबादतें हैं कयुंके कुर्बानी को अल्लाह के साथ जास किया गया है और मज्लूक के अम्माल में से सिर्फ़ धबादात ही अल्लाह के साथ जास होती हैं। धसी लिअे “सलाती” के जअद “प नुसुकी” इरमाया के कुर्बानी (भून जहाना ओर ज़जह करना) भी दीगर धबादतों की तरह अेक धबादत है और उसका मुस्तहिक भी सिर्फ़ अल्लाहतआला ही है। “लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन” में लइज़ “अल्लाह” पर मौजूद लाम धस्तिह्काक (हक्कदार) का मअनी दे रहा है यअनी नमाज़, कुर्बानी और दीगर धबादत का हक्क अल्लाह रब्बुल् आलमीन ही रजता है।

“ला शरीकलहू” नमाज़ में उसका कोध शरीक है न कुर्बानी में। लिहाज़ा धनकी अदाधगी में न तो अल्लाह के साथ किसी को शरीक किया जाये और न ही अल्लाह

કે ઇલાવહ કિસી કો ઉન કા સઝાવાર હેઠરાયા જાએ. ઇબાદત કા મુસ્તહિક વહી રબ હૈ, જો અઝીમ બાદશાહત કા માલિક હૈ.

और अल्लाहतआलाने इरमाया : “पस तुम अपने रब ही के लिये नमाज़ पड़ो और कुर्बानी दो.”

(सूरह कौषर आयत : २)

(ઇસ આયત મેં) અલ્લાહતઆલાને જિન કામોં કા હુક્મ દિયા હૈ વહ ઇબાદત હી હૈં. કયુંકે તમામ ઝાહિરી ઓર બાતિની (અંદરૂની) અઅમાલ વ અક્વાલ જો અલ્લાહતઆલા કો પસંદ ઓર મહબૂબ હૈં ઉન સબ કો ઇબાદત હી કહા જાતા હૈ. ઇસી તરહ નમાઝ ઓર કુર્બાની કા ભી અલ્લાહતઆલાને હુક્મ દિયા હૈ ઓર યે અઅમાલ ઉસે મહબૂબ ઓર પસંદ હૈં. ઇસ લિએ યે ભી ઇબાદત હૈં.

और इरमाने नबવી है : हर रत अली रहियल्लाहु अन्हु इरमाते हैं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने मुझे आर बातें ईर्शाए इरमायें : “

- (१) जो शम्स गैरुल्लाह के लिये जानवर झंजह करे उस पर अल्लाहतआला की लम्नत है.
- (२) जो शम्स अपने वालिदैन पर लम्नत करे उस पर भी अल्लाहतआला की लम्नत है.
- (३) जो शम्स किसी भिदअती को पनाह दे उस पर भी अल्लाहतआला की लम्नत है.
- (४) और जो शम्स हुद्दूहे जमीन के निशानात को बटले उस पर भी अल्लाहतआला की लम्नत है.” (सहीह मुस्लिम जाज : कुर्बानी, नसाई)

इस हदीष से पाबित हुवा के जो शम्स गैरुल्लाह के तर्कुज और तर्जूम के लिये जानवर झंजह करे उस पर अल्लाहतआला की लम्नत है. अल्लाहतआला की लम्नत से मुराद उसकी रहमत से दूरी और महज़मी है. पस जिस शम्स पर जुद अल्लाहतआला लम्नत करे वह उसे अपनी जास रहमत से दूर और महज़म कर देता है.

जबके उसकी आम रहमत मुसलमानों, काफ़िरो

और तमाम मज्लूक़ात के शामिले हाल (सब के लिये) है. याद रहे के जिस गुनाह पर अल्लाहतआला की लअ्नत की पधट हो वह कबीरह गुनाह होता है क्युंके गैरुल्लाह के तर्कुब और तअज़ीम की जातिर झबह करना शिर्क है एस लिये एसका धर्तिकाब करनेवाला अल्लाहतआला की लअ्नत, झिटकार और उसकी रहमत से दूरी ओर महज़मी का मुस्तहिक ठेहरता है.

नीळ धशदि नबवी है : हज़रत तारिक भिन शिहाब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरमाया : “अेक शअ्स अेक मज्जी की पजह से जन्नत में गया और अेक शअ्स अेक मज्जी ही की पजह से जहन्नम में जा पहुंचा. सहाबहअे किराम रदियल्लाहु अन्हुमने अर्ज किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! वह कैसे ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरमाया : “दो आदमीयों का अेक कोम पर गुज़र हुवा. जिसका अेक जुत था वह किसी को वहां से चडावा

ચડાએ બગેર ગુઝરને કી ઇજાઝત ન દેતે થે. ઉન લોગોંને ઇન મેં સે એક સે કહા : ચડાવા ચડાઓ. ઉસને કહા : મેરે પાસ ચડાવે કે લિએ કુછ નહીં હૈ. ઉંહોંને કહા : તુમ્હેં ચે કામ ઝરૂર કરના હોગા. ચાહે એક મખ્ખી હી ચડાઓ. ઉસને એક મખ્ખી કા ચડાવા ચડા દિયા. ઉન લોગોંને ઉસકા રાસ્તહ છોડ દિયા ઓર ઉસે આગે જાને કી ઇજાઝત દેદી. વહ ઉસ મખ્ખી કે સબબ જહન્નમ મેં જા પહુંચા. ઉંહોંને દૂસરે સે કહા : તુમ ભી કોઇ ચડાવા ચડાઓ તો ઉસને કહા : મેં તો અલ્લાહતઆલા કે સિવા કિસી કે વાસ્તે કોઇ ચડાવા નહીં ચડા સકતા. ઉંહોંને ઉસે કત્લ કર દિયા. ઓર વહ સીધા જન્નત મેં જા પહુંચા.”

(ઇમામ અહ્મદ : કિતાબુલ્ જુહદ)

ઇસ હદીષ સે ષાબિત હુવા કે બુત કે તર્ફુબ કે લિએ જાનવર ઝબહ કરના ઉસ શખ્સ કે લિએ દુખૂલે જહન્નમ કા સબબ બના. ઝાહિર હૈ કે ચે કામ કરનેવાલા આદમી મુસલમાન થા જો અપને ઇસ

शिर्कीयह झिअल की पजह से जहन्नम रसीद हुवा. एस से मअलूम हुवा के गेरुल्लाह के तर्कुब और तअज़ीम के लिअे जानपर ठबह करना और यडावे यडाना “शिर्के अङ्बर-सब से बडा शिर्क” है. नीऊ एस हदीथ से ये भी पाबित हुवा के गेरुल्लाह के तर्कुब के लिअे मज्जी जैसी बेकदर प कीमत चीज़ का यडावा यडाना जब उस आदमी के लिअे जहन्नम में दाखिल होने का सबब बना तो जो चीज़ इाईदह में एस से बडी और कीमती हो उसका यडावा यडाना उसी कदर दुपूले जहन्नम (में जाने) का बडा सबब होगा.

“करिब” यडावा यडाओ. एस से मअलूम हुवा के उस कोम के लोगोंने उन राहगीरों को एस अमल के लिअे (मेहज़ कहा था) मजबूर नहीं किया था. क्युंके एस से पेहले ये बयान है के वह किसी को वहां से यडावा यडाओे बगैर गुज़रने की इजाज़त न देते थे. एस में कोई जबर या इक़््राह (ज़बरदस्ती या नइ़रत) नहीं. क्युंके अगर वह आदमी चाहता तो वापस आकर

કિસી દૂસરે રાસ્તેહ સે ચલા જાતા ઓર અગર કહા જાએ કે ઉન લોગોંને ચડાવા ન ચડાને કી સૂરત મેં કલ્લ કી ઘમકી દી થી ઇસ લિએ વહ ઇસ અમલ પર મજબૂર થા જબકે જબર વ ઇફ્રાહ કી સૂરત મેં કિસી અમલ પર કોઇ મુવાખઝહ (પકડ) નહીં. ઇસ કા જવાબ ચે હે કે ચે વાકિઅહ હમ સે પેહલી ઉમ્મતોં કા હે. ઇફ્રાહ ઓર ઇજબાર (જબર) કી સૂરત મેં ઇત્મીનાને કલ્લ કે સાથ બઝાહિર કલિમહ એ કુફર અદા કરને ચા કુફરીયહ કામ કરને કી ઇજાઝત ઓર ઉસ કે અદમ મુવાખઝહ કા મસ્અલહ સિર્ફ ઇસી ઉમ્મત કી ખુસૂસીયત હે. અગલી ઉમ્મતોં મેં ઇસકી ઇજાઝત ન થી.

ઇન આયાત ઓર હદીષોં સે કુછ મસાઇલ ચે હે :

- (૧) આયત “કેહ દો મેરી નમાઝ ઓર મેરી કુર્બાની...” કી તફ્સીર મઅલૂમ હોતી હે.
- (૨) આયત “પસ તુમ અપને રબ હી કે લિએ નમાઝ...” કી તફ્સીર ભી મઅલૂમ હોતી હે.
- (૩) હદીષ મેં રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ

सल्लमने सबसे पेहले गेरुल्लाह के लिअे ञ्जह करनेवाले पर लअूनत इरमाई है.

(४) हदीष में है के “अपने वालिदैँन पर लअूनत करनेवाला लअूनती है.” इस से ये माझूऊ होता है के अगर तुम किसी के वालिदैँन पर लअूनत करोगे तो वह तुम्हारे वालिदैँन पर लअूनत करेगा. इस तरह तुम जुद अपने वालिदैँन पर लअूनत का सबब बनोगे.

(५) हदीष में है के “जो शअ्स किसी बिदअती को पनाह दे, वह मलूिन (लअूनती) है.” इस हदीष में बिदअती से मुराद ऐसा शअ्स है जिस पर बिदअत के इर्तिकाब (अमल करने) की वजह से अल्लाहतआला की तरफ से सजा पाजिब हो और वह उस से बचने के लिअे किसी की पनाह दूँद रहा हो.

(६) “जो शअ्स हुदूँदे ञ्मीन के निशानात व अलामात को आगे-पीछे कर के बदल डाले, वह

ली लअनती है.” एस से ऐसे निशानात मुराए हैं जो ऋमीन के दो मालिकों की हुदूदे भिन्कीयत को मुतअैय्यन (अलग) करते हैं और उन निशानात को बदलने से पडोसीयों का हक्क मारना मइसूद हो.

- (७) किसी मुतअैय्यन (जास) शप्स पर और उमूमी तौर पर गुनाहगार लोगों पर किसी का नाम लिखे बगैर लअनत करने में इर्क है.
- (८) अेक मज्जी का चडावा चडाने के सजब अेक आदमी के जहन्नम में जाने का वाकिअह बडा धनरतनाक (नसीहतवाला) है.
- (९) मज्जी का चडावा चडानेवाला जहन्नम रसीद हुवा हालांकि उसका मइसूद शिर्क करना कतअन् (बिल्कुल) न था बल्के उसने मेहज अपनी जान बचाने की जातिर ऐसा किया था.
- (१०) अहले धिमान की नजर में शिर्क एस कदर संगीन (सप्त तारी) जुर्म है के उस मोमिनने कत्ल

होना गपारा कर लिया, लेकीन अहले सनम्
(जुत परस्तों) का मुतालबह (मांग को) पूरा न
किया, हालांकि उन्होंने उस से सिर्फ़ झाहिरी तोर
पर अमल करने का मुतालबह किया था.

(११) शिर्क का धर्तिकाब कर के जहन्नम में जानेवाला
शाब्स मुसलमान था. अगर वह काफ़िर होता तो
आप यूँ न इरमाते के “वह अक मज्जी की
पजह से जहन्नम में गया.”

(१२) इस हदीष से अक दूसरी सहीह हदीष की ताईद
ली (तरफ़दारी) होती है, जिस में नबी
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरमाया
: “जन्नत और जहन्नम तुम में से हर अक के
जूते के तरमे से ली ज़ियादह करीब है.”

(सहीह बुखारी बाब : अर्रिकाक, ह : ५४८८)

(१३) जुतपरस्तों समैत (के साथ) हर अक के नज़्दीक
कल्बी (दिल का) अमल सबसे ज़ियादह अहम
और मज़सूदे अज़्ज़म (बड़ा मज़सूद) होता है.